तिरंगा कह रहा है ...

लहरा रहा है मदमस्त हो कर
पर नम इसका कोई कोना है,
देख हमको, तिरंगा कह रहा
कोई इसकी, अधूरी कामना है
गुलामी के चंगुल से मुक्त हुआ
कुर्बानी दे कर इसको छीना है
पर जो दिखाए थे इसको सपने
उनको अभी साकार होना है
आज भी है दर्द बाकी कहीं तो ,
फिर दिलों को संग सीना है
तिरंगे पर गर्व तो है सबको
पर इसे आसमां अभी छूना है
हर ललाट में तेज केसरिया,
श्वेत सुकून हर घर में होना है
हरी हरीतिमा हिय-आँगन में
गतिमान चक्र सा होना है
ऋचाए आज गाना चाहती हैं
आयतों का सुर ताल होना है
गुरुवाणी के पाठों, गिरजों का
संग एक बड़ा परिवार होना है
साँसों में, गर्मी की है जरुरत
कुछ लहू फिर कुर्बान होना है
वतन हमसे फिर कुछ मांगता है
हृदय में अब नव ज्वार होना है
अपने उन्मुक्त तिरंगे के साये में
मिलजुल कर सबको जीना है
आजाद हुए हम बरसों पहले
पर अभी नया सवेरा होना है

● निपुण पाण्डेय अपूर्ण

मातृभूमि जय हे!

हिरण्यगर्भे! जगद-अंबिके!
मातृभूमि! जय हे!
अमरनाथ से रामेश्वर तक,
सोमनाथ से भुवनेश्वर तक।
मेघालय - बंगाल - चेन्नई,
अंदमान, गोआ-परिसर तक।
शस्य-श्यामला, प्राणदायिनी!
पुण्य भूमि! जय हे!
है पीयूष-वारि की धारा,
सूर्य-सोम ने जिसे दुलारा।
पवन प्राण देता नव पल-पल,
षड ऋतुओं ने सदा सँवारा।
रज सिंदूर अर्गजा जैसी,
देवभूमि! जय हे!
अंतरिक्ष, मेदिनी, वनस्पति,
देती जिसको शांति नित्यप्रति।
आदि- स्थान विद्या का, देता
ज्ञान विज्ञान बृहस्पति।
वेदों की अवतार मही,
ऋषि-वृंद-भूमि जय हे!
गंगा- गोदावरी- नर्मदा,
देती जीवन-दान सर्वदा।
मांधाता, विक्रमादित्य, सुर-प्रिय
अशोक की शौर्य-संपदा।
राम-कृष्ण-गौतम-गांधी की,
कर्म भूमि! जय हे!
जहाँ विविध विचार-धारायें,
जीवन को सार्थक बनाएँ।
अनेकता में ऐक्य, ऐक्य में
अनेकता का पाठ पढ़ाएँ।
एक चित्त सब एक प्राण,
आदर्श भूमि! जय हे!
अकथनीय है गौरव-गरिमा,
गा न सके कोई कवि महिमा।
कोटि-कोटि प्राणों में बसती,
तेरी रम्य रूप-छवि-प्रतिमा।
अनुपमेय, अनवद्य, अपरिमित,
धर्म-भूमि! जय हे!
पूजें आबू-विंध्य-हिमाचल,
पाँव पखारे सागर का जल।
ममता का मधु-कोष सदा
बरसाते हैं लहराते बादल।
आभामयी मुक्ति-पथ-दात्री,
पितृ-भूमि! जय हे!
है गीर्वाण धरित्री पावन,
जन-कल्याण मही मनभावन।
देती है आदेश प्रेम का,
ऋषि-निर्वाण-स्थली सुहावन।
स्वर्गादपि गरीयसी अनुपम,
जन्म भूमि! जय हे!

● राजीव त्रिपाठी, भोपाल

आजादी आई आधी रात को

जमीन के साथ दिलों का भी बँटवारा

15 अगस्त, 1947 को आधी रात के वक्त, जब पूरा देश गहरी नींद में सोया हुआ था, वर्षों की गुलामी के घने कुहरे को भेदती हुई रोशनी की एक लकीर दाखिल हुई और लंबी दासता के बाद देश ने एक आजाद सुबह में आँखें खोली। ब्रिटिश हुकूमत की 200 साल की गुलामी से मिली यह आजादी अथक संघर्षों, त्याग और बलिदान का परिणाम थी। आजादी की यह फसल हजारों देशभक्तों के खून से सींची गई थी।

पूरे एशिया महाद्वीप की सबसे बड़ी दो घटनाएँ, जिसमें एक उपलब्धि और दूसरी दुर्घटना थी, एक साथ घटित हुई। एक देश गुलामी से आजाद हुआ और एक विशाल भूभाग पर विभाजन की लकीर खींच दी गई। यह आजादी अकेली नहीं आई थी। अपने साथ लाई थी, बँटवारे का दर्द और ऐसे गहरे घाव, जो आने वाली कई सदियों तक भरे नहीं जा सकते थे। अँग्रेज हुक्मरान जाते-जाते देश की जमीन को दो टुकड़ों में बाँट गए। यह बँटवारा सिर्फ जमीनों

इग्लैंड और यूरोप की जेलें हिंदुस्तानी कैदियों से भर रही थीं। सिर्फ भारत ही नहीं, पूरी दुनिया में शक्तिशाली शासक मुल्कों ने अपने उपनिवेशों और वहाँ क नागरिकों के साथ ऐसा ही नृशंस व्यवहार किया और उन्हें मुक्त करने क पहले वहाँ किसी-न-किसी रूप में घृणा और वैमनस्य के बीज बोए थे, बंटवारे की जमीन तैयार की थी और ऐसे घाव छोड़ गए थे, जिन्हें भरना नामुमकिन था।

का ही नहीं था, यह बँटवारा था दिलों का, स्नेह का, अपनों का, भारत की गौरवमयी साझा सांस्कृतिक विरासत का। यह बँटवारा था, सिंधु-घाटी की सभ्यता, हड़प्पा-मोहन जोदड़ों का। यह बँटवारा उत्तर में खड़े हिमालय का था। उन नदियों का था, जो दोनों देशों की सीमाओं में बह रही थीं। उन हवाओं का था, जो इस देश की जमीन से बहकर उस देश की जमीन तक जाती थीं।

यह बंटवारा था, इकबाल और मीर का, टैगोर और नजरुल इस्लाम का। कला, साहित्य, संगीत हर चीज को फिरंगियों ने अपनी तेज कटार से दो टुकड़ों में बाँट दिया था और हम निरीह सिर्फ उसकी तड़प को महसूस कर पा रहे थे।

यह इनसानी रिश्तों, अपनों और सबसे बढ़कर लोगों के दिलों का बँटवारा था। रातों-रात लोग अपने घर, जमीन, खेत-खलिहान सब कुछ छोड़कर एक अनजान धरती के लिए निकल पड़े, जो अँग्रेजों के कानूनी कागजों के मुताबिक उनका नया देश था।

आम आदमी के लिए इस आजादी का अर्थ समझना थोड़ा मुश्किल था, जो उनसे उनकी जड़-जमीन सबकुछ छीने ले रही थी।

गुलाम भारत में स्वतंत्रता का संघर्ष तो खून से लथपथ था ही, आजादी उससे ज्यादा खून में नहाई हुई थी। लंगोटी और लाठी वाला वह संत आजादी के नजदीक आने के साथ सत्ता की लड़ाई के पूरे परिदृश्य से गायब हो गया था। वह ऐतिहासिक फोटो, जिसमें मुहम्मद अली जिन्ना और जवाहरलाल नेहरू लॉर्ड माउंटबेटेन के साथ बैठे हैं, जब भारत और पाकिस्तान के बँटवारे पर स्वीकृति की आखिरी मोहर लगी थी, उस तस्वीर में वह लाठीधारी नदारद है। गांधी उस समय इन सबसे क्षुब्ध अपने आश्रम में बैठे सूत कात रहे थे। उन्हें दुःख था उस आजादी के लिए, जो अपने भाईयों के विभाजन और खून से लिखी जाने वाली थी। हिंदुस्तान को अपनी उपनिवेशी हैसियत का अहसास तो उसी दिन हो गया था, जब 3 सितंबर, 1939 को ब्रिटिश वायसराय लॉर्ड लिनलिथगो ने यह घोषणा की कि हिंदुस्तान और जर्मनी के बीच युद्ध की शुरुआत हो चुकी है। बड़े पैमाने पर हिंदुस्तानियों को विश्व-युद्ध की आग में झोंका जा रहा था।

इंग्लैंड और यूरोप की जेलें हिंदुस्तानी कैदियों से भर रही थीं। सिर्फ भारत ही नहीं, पूरी दुनिया में शक्तिशाली शासक मुल्कों ने अपने उपनिवेशों और वहाँ के नागरिकों के साथ ऐसा ही नृशंस व्यवहार किया और उन्हें मुक्त करने के पहले वहाँ किसी-न-किसी रूप में घृणा और वैमनस्य के बीज बोए थे, बंटवारे की जमीन तैयार की थी और ऐसे घाव छोड़ गए थे, जिन्हें भरना नामुमकिन था।

कुछ मुट्ठीभर अँग्रेजों ने लाखों हिंदुस्तानियों पर 200 सालों तक निर्द्वंद्व शासन किया, और यह 'बाँटो और राज करो' की फिरंगी चाल के कारण ही संभव हो सका। यह सत्ताधारियों के हित में था कि लोग कुछ बड़े सवालों और अपने असल दुश्मन फिरंगियों से न लड़कर आपस में ही संघर्ष करते रहें। फिरंगी इतिहास को पलट रहे थे, सौहार्द्र, समता और सहिष्णुता की सांस्कृतिक विरासत को धार्मिक मनमुटाव और संघर्ष का अखाड़ा बना रहे थे। यह गोरे शासकों की शातिर चालबाजियों में से एक था, जिसे विभाजन की शक्ल में वे हमारी आने वाली पीढ़ियों के लिए छोड़ गए।

एक स्वतंत्र गणतंत्र, आत्मनिर्भरता और खुदमुख्तारी के 60 वर्षों के गौरवमयी इतिहास पर खून के छींटे अब भी बदस्तूर कायम हैं, कुछ कराहें हैं, जिनकी आवाज अब भी इस देश की नींद में दाखिल होती हैं।

हम गुलाम क्यूं हैं

ध्यान रखो कि राष्ट्र झोपड़ियों में बसता है। किसान, जूते बनाने वाले, मेहतर, और भारत के ऐसे ही निचले वर्गों में तुमसे कहीं ज्यादा काम करने और स्वावलंबन की क्षमता है। वे लोग युग-युग से चुपचाप काम करते रहे हैं। वे ही हैं, जो इस देश की समस्त संपदा के उत्पादक हैं। फिर भी उन्होंने कभी शिकायत नहीं की। ऐसा दिन शीघ्र ही आने वाला है, जब उनका दर्जा तुमसे ऊपर होगा। धीरे-धीरे पूँजी उनके हथों में आ रही है। आधुनिक शिक्षा ने तुम लोगों का फैशन ही बदल दिया है। कितनी ही संपदा अनखोजी पड़ी हुई है, क्योंकि तुममें उसके अन्वेषण की क्षमता नहीं है। तुम लोगों ने अब तक इस जनता को दबाया है, अब उनकी बारी है और तुम लोग रोजगार की तलाश में भटकते-भटकते नष्ट हो जाओगे, क्योंकि यही

तुम्हारे जीवन का सर्वस्व बन गया है। जब भी मैं गरीबों के बारे में सोचता हूँ तो मेरा हृदय पीड़ा से कराह उठता है। बचने या ऊपर उठने का उनके पास कोई अवसर नहीं है। वे लोग हर दिन नीचे, और-और नीचे धँसते जाते हैं। वे निर्दयी समाज के वारों को निरंतर झेलते जाते हैं। वे यह भी नहीं जानते कि उन पर कौन वार कर रहा है, कहाँ से वार हो रहे हैं। वे यह भी भूल चुके हैं कि वे स्वयं भी मनुष्य हैं। इन सबका परिणाम है - गुलामी।

भागमभाग इस जिंदगी की दौड़-धूप में हमने देश के बचपन को कहीं भुला दिया है। जिस तरह देश में जल, बाघ, संस्कृति और कन्या बचाने की मुहिम चली है, ठीक वैसे ही बचपन के प्रति गंभीर होने की आज जरूरत है। बात चाहे बिगड़ते, अपराधी होते बचपन या फास्ट फूड एवं गरीबी से बीमार होते बचपन या श्रम व शरीर से शोषित होते बचपन की या गर्भ में दफन भ्रूण की। जिस बचपन से हमें हंसी, शरारत, जिदना, रूठना जैसी पहचान की अपेक्षा रहती है, वही बचपन अब भटकने लगा है। अति गंभीर समस्या है कि बच्चों के भविष्य के प्रति गंभीर होंगे। इसी आशा के साथ आपका अपना ... हिंदुस्तानी बचपन।

आओ फिर याद करें

आजादी की कहानी

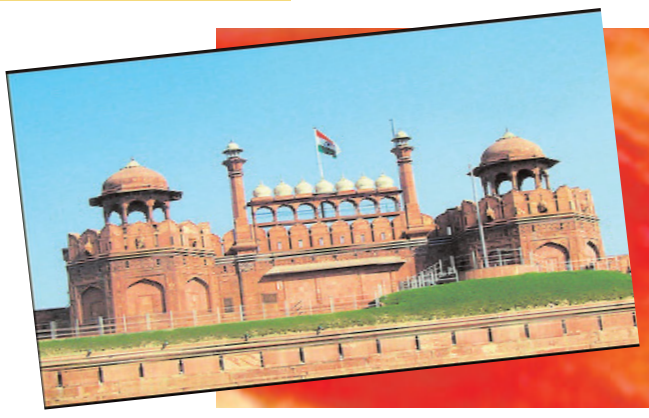

स्वतंत्रता दिवस का नाम जैसे ही आता हमारे शरीर के अंग -अंग फड़कने को मजबूर हो जाते हैं। गुलामी की जंजीर में जकड़े अपने देश को जब आजादी के रणबांकुरों ने अपने खून-पसीना बहाकर हमें यह आजादी सौंपी।

पुराने समय में जब पूरी दुनिया के लोग भारत आने के लिए उत्सुक रहा करते थे। यहां आर्य वर्ग के लोग मध्य यूरोप से आए और भारत में ही बस गए। उनके बाद मुगल आए और वे भी भारत में स्थायी रूप से बस गए। चंगेज़खान, एक मंगोलियाई था जिसने भारत पर कई बार आक्रमण

किया और लूट पाट की। अलेक्जेंडर महान भी भारत पर विजय पाने के लिए आया किन्तु पोरस के साथ युद्ध में पराजित होकर वापस चला गया। हेन सांग नामक एक चीनी नागरिक यहां ज्ञान की तलाश में आया और उसने नालंदा तथा तक्षशिला विश्वविद्यालयों में भ्रमण किया जो प्राचीन भारतीय विश्वविद्यालय हैं। कोलम्बस भारत आना चाहता था किन्तु उसने अमेरिका के तटों पर उतरना पसंद किया। पुर्तगाल से वास्को डिगामा व्यापार करने अपने देश की वस्तुएं लेकर यहां आया जो भारतीय मसाले ले जाना चाहता था। यहां फ्रांसीसी लोग भी आए और भारत में अपनी कॉलोनियां बनाई। अंत में ब्रिटिश लोग आए और उन्होंने लगभग 200 साल तक भारत पर शासन किया। वर्ष 1757 ने प्लासी के युद्ध के बाद ब्रिटिश जनों ने भारत पर राजनैतिक अधिकार प्राप्त कर लिया। और उनका प्रभुत्व लॉर्ड डलहौजी के कार्य काल में यहां स्थापित हो गया जो 1848 में गवर्नर जनरल बने। उन्होंने पंजाब, पेशावर और भारत के उत्तर पश्चिम से पठान जनजातियों को संयुक्त किया। और वर्ष 1856 तक ब्रिटिश अधिकार और उनके प्राधिकारी यहां पूरी मजबूती से स्थापित हो गए। जबकि ब्रिटिश साम्राज्य में 19वीं शताब्दी के मध्य में अपनी नई ऊंचाइयां हासिल की, असंतुष्ट स्थानीय शासकों, मजदूरों, बुद्धिजीवियों तथा सामान्य नागरिकों ने सैनिकों की तरह आवाज़ उठाई जो उन विभिन्न राज्यों की सेनाओं के समाप्त हो जाने से बेरोजगार हो गए थे, जिन्हें ब्रिटिश जनों ने संयुक्त किया था और यह असंतोष बढ़ता गया। जल्दी ही यह एक बगावत के रूप में फूटा जिसने 1857 के विद्रोह का आकार लिया।

भारत पर विजय, जिसे प्लासी के संग्राम (1757) में आरंभ हुआ नामा जा सकता है, व्यावहारिक रूप से 1856 में डलहौजी के कार्यकाल का अंत था। किसी भी अर्थ में यह सुचारु रूप से चलने वाला मामला नहीं था, क्योंकि लोगों के बढ़ते असंतोष से इस अवधि के दौरान अनेक स्थानीय प्रांतियां होती रहीं। यद्यपि 1857 का विद्रोह, जो मेरठ में सैन्य कर्मियों की बगावत से शुरू हुआ, जल्दी ही आगे फैल गया और इससे ब्रिटिश शासन को एक गंभीर चुनौती मिली। जबकि ब्रिटिश शासन इसे एक वर्ष के अंदर ही दबाने में सफल रहा, यह निश्चित रूप से एक ऐसी लोकप्रिय क्रांति थी जिसमें भारतीय शासक, जनसमूह और नागरिक सेना शामिल थी, जिसने इतने उत्साह से इसमें भाग लिया कि इसे भारतीय स्वतंत्रता का पहला संग्राम कहा जा सकता है। ब्रिटिश द्वारा जमीनदारी प्रथा को शुरू करना, जिसमें मजदूरों को भारी करों के दबाव से कुचल डाला गया था, इससे जमीन के मालिकों का एक नया वर्ग बना। दस्तकारों को ब्रिटिश निर्मित वस्तुओं के आगमन से नष्ट कर दिया गया। धर्म और जाति प्रथा, जिसने पारम्परिक भारतीय समाज की सुदृढ़ नींव बनाई थी अब ब्रिटिश प्रशासन के कारण खतरे में थी। भारतीय सैनिक और साथ ही प्रशासन में कार्यरत नागरिक वरिष्ठ पदों पर पदोन्नत नहीं किए गए, क्योंकि ये यूरोपियन लोगों के लिए आरक्षित थे। इस प्रकार चारों दिशाओं में ब्रिटिश शासन के खिलाफ असंतोष और बगावत की भावना फैल गई, जो मेरठ में सिपाहियों के द्वारा किए गए इस बगावत के स्वर में सुनाई दी जब उन्हें ऐसी कारतूस मुंह से

खोलने के लिए कहा गया जिन पर गाय और सुअर की चर्बी लगी हुई थी, इससे उनकी धार्मिक भावनाएं आहत हुईं। हिन्दु तथा मुस्लिम दोनों ही सैनिकों ने इन कारतूसों का उपयोग करने से मना कर दिया, जिन्हें 9 मई 1857 को अपने साथी सैनिकों द्वारा क्रांति करने के लिए गिरफ्तार कर लिया गया। बगावती सेना ने जल्दी ही दिल्ली पर कब्जा कर लिया और यह क्रांति एक बड़े क्षेत्र में फैल गई और देश के लगभग सभी भागों में इसे हाथों हाथ लिया गया। इसमें सबसे भयानक युद्ध दिल्ली, अवध, रोहिलखण्ड, बुंदेलखण्ड, इलाहबाद, आगरा, मेरठ और पश्चिमी बिहार में लड़ा गया। विद्रोही सेनाओं में बिहार में कंवर सिंह के तथा दिल्ली में बख्तखान के नेतृत्व में ब्रिटिश शासन को एक करारी चोट दी। कानपुर में नाना साहेब ने पेशावर के रूप में उद्घोषणा की और तात्या टोपे ने उनकी सेनाओं का नेतृत्व किया जो एक निर्भीक नेता थे। झांसी की रानी लक्ष्मी बाई ने ब्रिटिश के साथ एक शानदार युद्ध लड़ा और अपनी सेनाओं का नेतृत्व किया।

क्या कीमत है आजादी की

हमने कब यह जाना है, अधिकारों की ही चिन्ता है
फर्ज़ कहाँ पहचाना है, आज़ादी का अर्थ हो गया
अब केवल घोटाला है, हमने आज़ादी का मतलब
भ्रष्टाचार निकाला है, आज़ादी में खा जाते हम
पशुओं तक के चारे अब, 'घोटालों' और 'भ्रष्टाचारों' हमको
आज़ादी से प्यारे अब, आज़ादी के खेल को खेलो
फ़िक्सिंग वाले बल्लों से, हार के बदले धन पाओगे
'सट्टेबाज़ों' दलालों से, आज़ादी में वैमनस्य के
पहलु खूब उभारो तुम, आज़ादी इसको कहते हैं?
अपनों को ही मारो तुम, आज़ादी का मतलब अब तो
द्वेष, घृणा फैलाना है ॥
आज़ादी में काश्मीर की, घाटी पूरी घायल है
लेकिन भारत का हर नेता, शान्ति-सुलह का कायल है
आज़ादी में लाल चौक पर, झण्डे फाड़े जाते हैं
आज़ादी में माँ के तन पर, चाकू गाड़े जाते है
आज़ादी में आज हमारा, राष्ट्र गान शर्मिन्दा है
आज़ादी में माँ को गाली, देने वाला ज़िन्दा है
आज़ादी मे धवल हिमालय, हमने काला कर डाला
आज़ादी मे माँ का आँचल, हमने दुख से भर डाला
आज़ादी में कठमुल्लों को, शीश झुकाया जाता है
आज़ादी मे देश-द्रोह का, पर्व मनाया जाता है
आज़ादी में निज गौरव को, कितना और भुलाना है ?
देखो! आज़ादी का मतलब, हिन्दुस्तान हमारा है
आज़ादी पर मर मिट जाना, एक अरब को प्यारा है
मित्रों! आज़ादी का मतलब,निर्भय भारत-माता है
आज़ादी का अर्थ दूसरा, भारत भाग्य-विधाता है
प्यारो! आज़ादी का मतलब, अमर तिरंगा झण्डा है
आज़ादी दुश्मन के सर पर, लहराता इक डण्डा है
आज़ादी से अपने घर में, नई रोशनी आई है
आज़ादी पाकर भारत ने, जग में धूम मचाई है।